आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:31-10-14

विश्व की सर्व आत्माओं को मुक्ति और जिवनमुक्ति देने वाले बेहद के बाप ने कहा, "मीठे बच्चे - बाप की एक नजर मिलने से विश्व के मनुष्य-मात्र निहाल हो जाते हैं, इसलिए कहा जाता है नजर से निहाल....."

हम सब के मिठे-मिठे, प्यारे-प्यारे शिवबाबा ने बताया है कि उन्हें हम बच्चों को ज्ञान देने के लिए प्रकृति का सहारा लेना पड़ता हैं इसलिए वह ब्रह्मा का तन बहुत थोड़े टाइम के लिए लोन पर लेते हैं. लेकिन वह ब्रह्मा के तन की दो कर्मेन्दियों, मुख और आँख का ही उपयोग करते है. इसलिए जब कोई भी नया धारणा युक्त आत्मा को बाप के सामने लाते है, तो उन्हें बताते थे कि बाबा को पहचान ना है तो उनकी दृष्टि जरूर लो. साथ में उनके मुख से निकले महान महा-वाक्यों को भी सूनों. क्योंकि बाबा कि दृष्टि से आत्मा को रुहानी प्यार मिलता है और महान-वाक्यों को सुनकर आत्मा को अतीन्द्रिय सुख मिलता हैं. आत्मा तृप्त हो जाती हैं. खुशी से भरपूर हो जाती हैं. बाबा की दृष्टि से ही आत्मा को मुक्ति-जिवनमुक्ति का वरदान मिल जाता है इसलिए कहा जाता है नजरों से निहाल.

यह तो हम सब जानते है कि बाबा आया है विश्व की सर्व आत्माओं को सतोप्रधान बनाकर अपने घर ले जाने के लिए और इस धरती पर सुख-शांति की दुनिया, सतयुग की स्थापना करने के लिए. बाबा ने हम बच्चों (आत्माओं) को यह भी समझाया है कि हमारी आत्मा जो तमोप्रधान बन गई है उसे एक बाप की याद से ही सतोप्रधान बना सकते है, क्योंकि बाप ही सर्व मनुष्य आत्माओं का पिता है और पतित-पावन (प्योरीफायर) भी हैं.

बाबा हमें हर रोज अपने महा-वाक्यों से अलग-अलग युक्तियां ही बतलाते है कि हम आत्माये कैसे उस परमात्मा को याद कर सकती हैं जिसे की आत्मा फिर से दिव्य-गुणों और शक्तिओं से भरपूर हो जाये, सम्पूर्ण पवित्र और सतोप्रधान बन जाये. आज भी बाबा ने एक और युक्ति से बाप को याद करना सिखलाते हुए कहा, इतना याद रखो कि "अब हमें अपने घर जाना है फिर सतयुग में आना हैं." इसके लिए आत्मा को निर्मोही और सारी दुनिया से वैराग्य दिलाना भी जरूरी हैं. आत्मा निर्मोही बन जाये इसके लिए याद रखो कि "हम आत्मा अकेले आई थी, फिर अकेले जाना हैं." सब बातों से आत्मा को वैराग्य आ जाये इसके लिए याद रखो कि "हम आत्मा खाली हाथ आई थी, फिर खाली हाथ जाना हैं."

बाबा की याद हम आत्माओं को पक्की हो जाये इसके लिए आज की मुरली से निकाले गये कुछ महा-वाक्यों -

- बाबा ने कहा - यहॉ तो बाप बैठे है, इनकी तो सारी दुनिया की जो भी मनुष्य आत्माये हैं सब तरफ नजर जाती है. जानते है सबको मुझे वर्सा देना है. भल बैठे यहाँ है पर नजर सारे विश्व पर और सारे विश्व के मनुष्य मात्र पर है क्योंकि सारे विश्व को ही निहाल करना होता हैं.

- बाप समझाते हैं यह पुरुषोत्तम संगमयुग है. तुम जानते हो बाबा आया हुआ है सबको शांतिधाम, सुखधाम ले जाने. सब निहाल हो जाने वाले है.

- बाबा कहते है - ड्रामा प्लेन अनुसार सबको वापस जाना है क्योंकि नाटक पूरा होता है. अब नई दुनिया स्थापन होनी हैं. अब तुम्हारी बुद्धि में है - बाबा आया हुआ है. पैरेडाइज स्थापन होगा और हम शांतिधाम में चले जायेंगे. सबकी गति होगी और तुम्हारी सद्गति होगी.

- बाबा कहते है - अब तुम बच्चों को अन्दर में बड़ी खुशी होनी चाहिए. बाबा आया हुआ है, यह पुरानी दुनिया तो जरूर बदलेगी. तुम बच्चों को याद है – अभी हम जाते है सुखधाम.

- यह याद रहना चाहिए अभी हम पुरुषोत्तम संगमयुग पर हैं, हम नई दुनिया में जाने वाले हैं. यह याद रहे तो भी तुमको बाप की याद रहेगी.

- बाप कहते है यह नॉलेज जो मैं अभी तुमको देता हूँ कल्प बाद फिर मैं ही आकर दूँगा. यह नई दुनिया के लिए नया ज्ञान है. यह ज्ञान बुद्धि में रहने से खुशी बहुत होती है दूसरे तरफ फिर फिल भी होता है. अरे, ऐसा मिठा बाबा हम फिर कल्प बाद देखेंगे.

- बाप आते ही हैं - शांतिधाम-सुखधाम में ले जाने. तुम शांतिधाम-सुखधाम को याद करों तो बाप भी याद आयेगा.

- बाप कहते है - तुम्हें पुरानी दुनिया से ममत्व निकाल देना है. सुखधाम को बुद्धि से याद करना है तो खुशी भी रहेगी. खुशी-खुशी यह शरीर छोड़ देंगे. फिर नया शरीर लेकर सतोप्रधान दुनिया में आयेंगे.

ॐ शांति.